बोलती दीवार

ज़रा सोचें अगर दीवरें बोलने लगें तो क्या ही मजेदार हो। एक दिन यूं ही बैठा सोच रहा था। या कहें सोच में पड़ा था कि सामने वाली दीवार में थोड़ी हरकत हुई। कि जैसे कोई अपने बदन से नींद के आवेग झाड़ता हो। अचानक उस ओर मेरी नजर गई। उसने कहा क्या सोच रहे हो? यही कि बॉस की कैबिन में कल भााम क्या पक रहा था। तुम्हारा एप्रेजल इस बार कितना होगा? मिस भौली को कितना उछाल मिलने वाला है आदि आदि। मैं तो चौंक ही गया। इस बेजान दीवार को यह कैसे मालूम चला कि ठीक मैं यही सब कल रात से सोच रहा हूं। न खाना खा सका और न सुबह से मन ही मयूर है। जबकि आज उसका जन्म दिन है। उससे मिलने भी जाना है। अगर मुंह लटकाए गया तो केक उठा कर मुंह पर चस्पा कर देगी। पर बुरा क्या मानना। दुधारू गाय के लतार भी हंसते हुए खाना अच्छा लगता है। उससे भाादी के सपने आज से नहीं बल्कि तकरीबन दस बारह साल से देख रहा हूं। फिर से सपने बुनने भाुरू ही किया था कि

'ये भाई क्या सोच रहा है? फिर वही बात तुम्हें याद आ रही है कि उसने जाने से पहले तुम्हें क्या कहा था। कहा था कि इस बार अपने जन्म दिन से पहले भाादी करना चाहती हूं। और देखते ही देखते एक साल गुजरे को है। मगर तेरी कंगाली अब तक नहीं गुजरी। हर दिन हर महिने मुंह बा देते हो कुछ पैसे दे दो।'

तेरा बॉस चांडाल है। उसे गोरा बदन छूने दो छूने दो ना। यही गाए जा रहा था भौली के सामने। बहुत गुजारि ा के बाद उसने। बस बस तू ज्यादा रोमांटिक मत हो। ज्यादा कुछ नहीं हुआ जितने में भौली को 50 फीसदी उछाल मिलने के चांस थे उतने ही बदन के गांठ दीखे। लाख कोि ा ा करता रहा तेरा बॉस मगर उसकी एक न चली।

जहां तक तेरी बात है तो सुन। तुझे बॉस न तो चाहता है और न तेरी सूरत ही पसंद है। तेरे से वो डरता है। उसे लगता है किसी दिन तू उसकी सियासत पर हमला न बोल दे। इसलिए तेरा पत्ता साफ करने की खड़यंत रच रहा है। मगर तू चिंता मत कर तेरे लिए एक है जो चाहता है तू यहीं बना रह। सो तुझे भी मिलेगा मगर भौली ये कम। इसलिए बेहतर है किसी और घर में दस्तक दे। क्या पता तेरी लॉटरी लग जाए।

मैंने बेताबी से पूछा और बता क्या बातें हो रही थीं? भौली ने और कितनी लटें कान से मुक्त कीं। बता न क्योंकि उसके लटे यार हैं बड़ी खतरनाक। उसने पिछले बॉस को तो अपनी लटों में ही बांध रखा था। लेकिन इसबार उसकी ज्यादा नहीं चल रही है।

चुप हो जा तूझे कुछ पता भी है। यूंह ी चपड़ चपड़ करता रहता है। कुछ ऑब्जर्वे ान स्कील तो है नहीं। बस बड़बड़ करता रहता है। जब भी वो फॉरेन से कुछ लाता है तो उसके लिए ख़ासकर पैकेट थमाता है। वो भी चुपके से हथिया लेती है। तूं क्या सोचता है। सबकुछ साफ साफ है। अगर ऐसा सोचता है तो तू यार निरा गदहा है। कभी सही मायने में भी ढेचू ढेचू कर लिया कर। जब भी थोंथ खेलता है केवल दूसरे के सामने बॉस की बुराई ही उगलता है। क्यों तुझे पसंद करेगा। तुम से अच्छा तो तूलिका है। वो कम से कम जहर तो नहीं उबलती। वो क्या सोच रही है इसकी भनक किसी को भी नहीं लगता। यहां तक कि मनिता जो हर दम कान लगाए उसकी कैबिन के बाहर बैठी रहती है। वो तो सारी खबरें तूलिका को देती है लेकिन उसे मनिता की ओर से कुछ भी हासिल नहीं होता। तूलिका मुंह वहीं खोलती है जहां उगलने का सही, सटीक और मार नि ाने पर लगे। और एक तू है जहां दो बुराई में लगे हों वहां तो बस तुम्हें कोई नहीं रोक सकता। खुद तेरी वो भी नहीं।

तुझे क्या लगता है कि तू नकारा है। नकाबिल है इसलिए तूझे फॉरेन का मुंह नहीं देखने दिया जाता। और जिन्हें सालाना दो तीन बार भेजा जाता है वो क्या टैलेंट की खेती पेट में उगा कर आते हैं। वो भी वहीं से पैदा हुए है जहां से सब होते हैं। बस फर्क यह है कि बाहर आने के बाद खुजली कर कर के सब की दाग देखना सीख चुके हैं। मनिका, भौली, बैली सब की सब विदे ा की घूंघट उठा चुकी हैं। एक तू ही है जिसे टूर के नाम पर साड़ा दे ा इत्थे घूम बे। और तुझे वहीं भेजा जाता है जहां कुछ न कुछ लोचा होता है। अगर काम नहीं हुआ तो तूझे सुना कर कि एक भी काम नहीं होता। आगे के रास्ते भी बंद कर दिए जाते हैं।

अब तक मैं उसकी बात ध्यान से सुन, चुन रहा था। तभी फिर टपक पड़ा–

देख बे कनखोजर कल उसका जन्म दिन है। इसलिए मुंह बा कर मत चले जाना। कुछ लेते हुए जाना। वैसे तू जो भी ले कर जाएगा वो कहीं न कहीं से उसकी जेब से ही कटता हैं लेकिन कुछ देर के लिए भूल जाएगी।